Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APRIL, 2021, VOL- 8/64

शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान

शालिनी चौधरी, Ph. D.

एसोसिऐट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय, अलीगढ़

Abstract

आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये गये क्रान्तिकारी परिवर्तन के कारण वह शिक्षा शास्त्री के रूप में प्रसिद्ध हुये। आर्य समाज ने अपने आंदोलन के माध्यम से समाज में प्रत्येक व्यक्ति को विद्या के महत्व से अवगत कराने की पहल की। आर्य समाज एक संस्था के रूप में तथा आर्य समाजी व्यक्तिगत रूप से शैक्षिक कार्यो को बढ़ावा देने में संलग्न रहे। ब्रिटिश सरकार के बाद शैक्षिक क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान सबसे अधिक रहा। प्रस्तुत शोध पत्र शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज द्वारा किये गये योगदान का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है:–

महत्वपूर्ण शब्द *:– स्वामी दयानंद सरस्वती, आर्य समाज शिक्षा, समाज, प्राचीन परंपरा, नैतिक अध्यात्मिक।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

आर्य समाज के संस्थापक दयानंद सरस्वती अनोखे व्यक्तित्व व बेमिसाल प्रतिभा के धनी, अनेकों लोगों के प्रेरणास्त्रोत एक युग पुरूश थे। दयानन्द सरस्वती एक संघर्शशील समाज सुधारक, विचारक, विद्वान थे। उन्होंने 'हिन्दी' के प्रचारक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये। वह भारतीय पद्धति से दी जाने वाली शिक्षा के समर्थक थे। वह अंग्रेजी माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा के विरोधी थे। उन्होंने प्राचीन परंपरा के अनुसार वेद, उपनिशद, और स्मृतियों की शिक्षा पर बल दिया। ब्रिटिश सरकार के बाद आर्य समाज का भौक्षिक क्षेत्र में योगदान सबसे अधिक रहा।[1] इसका प्रभाव उत्तर प्रदेश और पंजाब में सबसे अधिक देखने को मिला। ईसाई संस्थाओं ने भी विभिन्न श्रेणियों के विद्यालयों का संचालन किया, किन्तु उनका उद्देश्य इन विद्यालयों के माध्यम से केवल धर्म परिवर्तन करना होता था। इस सन्दर्भ में सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि ईसाई मिशनरियाँ यह दावा नहीं कर सकती थीं कि उनके विद्यालयों में आर्य समाज की तुलना में लड़के और लड़कियों के विद्यालय अधिक थे।[2] आर्य समाज द्वारा संचालित तत्कालीन विद्यालयों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता था। एक, वे विद्यालय जो राजकीय विश्वविद्यालयों से सम्बन्धित थे तथा दूसरे वे विद्यालय थे जो भाासकीय नियन्त्रण से पूरी तरह मुक्त थे।[3]

आर्य समाज ने शिक्षा सम्बन्धी विद्यालयों को स्थापित करते समय इस बात का प्रचार किया कि भारत में अंग्रेजी साहित्य के आगमन ने विदेशी विचारों को तीव्रता से प्रवाहित किया है तथा इस भाशा ने हजारों नवयुवकों के मस्तिश्क को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। परन्तु विदेशी शिक्षा ने हमारे समाज को विभाजित करने का भी कार्य किया है जो कि अत्यधिक निन्दनीय है। इसके द्वारा एक ऐसे शिक्षित वर्ग का निर्माण हुआ है, जो स्वयं अपनी प्रेरणाओं से ही संचालित होता है।[4] यह वर्ग

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भारत के अशिक्षित लोगों को न तो किसी भी प्रकार से प्रभावित कर सकता है और न स्वयं उससे प्रभावित होता है। यह निराशाजनक परिणाम, एक विदेशी संस्था द्वारा संचालित एकांगी शिक्षा पद्धति की अनिवार्य परिणति है।

आर्य समाज ने लोगों के समक्ष विकल्प रखा कि उपरोक्त समस्या का उपाय सम्भव है यदि समाज का प्रत्येक वर्ग अपने दायित्वों का सही प्रकार से निर्वाह करें। आज के युग में सारे भारत में राश्ट्रीय शिक्षा प्रदान की जाने की आव यकता अनुभव की जा रही है तथा राश्ट्रीय शिक्षा साहित्य के अध्ययन की माँग निरन्तर बढ़ रही है।[5] यह विकल्प हमारे समक्ष समस्या का समाधान तला ाने का संकेत दे रहा है, जिसको आधार बनाकर हम राश्ट्र भाशा तथा उसके साहित्य का व्यवस्थित अध्ययन कर सकते हैं। इसका लाभ यह होगा कि राश्ट्रीय भावना एवं चरित्र के अनुकूल हिन्दू नौजवानों के मन में स्वभाव एवं प्रवृत्तियों का विकास किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त भारत में आर्थिक दृश्टिकोण को ध्यान में रखते हुए तकनीकी तथा प्रायोगिक शिक्षा का भी आरंभ किया जा सकता है।[6]

आर्य समाज आन्दोलन ने उपरोक्त विचारों का उदाहरण देते हुए कहा कि हमें इस प्रकार के विचारों से प्रभावित एवं प्रेरित होकर ऐसे शिक्षण संस्थान स्थापित करने को वरीयता देनी चाहिए। इस प्रकार के संस्थान प्रचलित शिक्षा व्यवस्था की कमियों को दूर करेगा। आर्य समाज की इस योजना का मुख्य उद्देश्य राश्ट्र भाशा तथा अन्य स्वदेशी भाशाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करना था ताकि उसके साथ अधिक से अधिक संख्या में जन समुदाय को जोड़ा जा सके। आर्य समाज का उद्दे य संस्कृत के प्राचीन साहित्य के अध्ययन पर बल देकर समाज के विभिन्न वर्गो को नैतिक तथा आध्यात्मिक सत्यों का ज्ञान कराना था।[7]

आर्य समाज की विचारधारा थी कि किसी भी राश्ट्र की शिक्षण संस्थाएँ ही उस राश्ट्र की बौद्धिक उन्नति की परिचायक तथा प्रतीक होती है। इस प्रकार की शिक्षण संस्थाएँ राश्ट्रों की नियति का सतत निर्धारण करती हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के माध्यम से कुछ ही वर्शो में हिन्दू समाज के बौद्धिक तथा सामाजिक चिन्तन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये थे। भारत में शायद ही कोई ऐसी चिन्तन पद्धति और सामाजिक प्रणाली रही होगी, जो उनके प्रचार तथा लेखन कार्य से प्रभावित न हुई हो।[8]

इन शिक्षण संस्थानों ने हिन्दुओं के जीवन को अग्रगामी बनाने का कार्य किया तथा उनमें कुछ ऐसी प्रवृत्तियों का संचार किया जिसने समय रहते ऐसे संस्थानों तथा आन्दोलनों को जन्म दिया, जिनका भारत की स्वाधीनता में महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस प्रकार की व्यवस्था को चलाने के लिए दयानन्द सरस्वती के समान मानसिक शक्तियों तथा योग्यताओं वाले व्यक्तियों की प्रेरणा की आवश्यकता है। आर्य समाज के द्वारा इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारत के विभिन्न राज्यों में शिक्षण संस्थान खोले गये।[9]

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आर्य समाज जब प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा था और चारों ओर नवजागरण आन्दोलन अपने चरम पर था तो, आर्य समाज के संस्थापक का आकस्मिक देहांत हो गया। 1883 ई0 में उनकी मृत्यु ने चारों ओर शोक की लहर दौड़ा दी। उनकी मृत्यु से देश का प्रत्येक आर्यसमाजी तथा साधारण जनता निराश थी लेकिन स्वामी जी की मृत्यु ने आन्दोलनमें दुगनी भाक्ति उत्पन्न कर दी और आर्य समाज ने उनके उद्दे यों की पूर्ति हेतु तेजी से शिक्षण संस्थाओ का गठन किया।[10]

स्वामी दयानन्द सरस्वती की मृत्यु के बाद आर्य समाज आन्दोलन के माध्यम से पुरातन संस्कृत साहित्य तथा वेदों के अध्ययन हेतु इस आन्दोलन को व्यवहारिक रूप देने की आवश्यकता को अब अधिक समय तक स्थगित रखना कठिन कार्य प्रतीत होने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वामी जी की मृत्यु के तुरन्त बाद उनकी स्मृति में दयानन्द ऐंग्लों वैदिक कॉलेज को स्थापित करने को प्राथमिकता दी गई। यह कॉलेज एक साथ फिरोजपुर, मुलतान तथा लाहौर में खोलने का प्रस्ताव रखा गया। आर्य समाज लाहौर द्वारा 9 नवम्बर 1883 को बुलाई गई सभा में यह प्रस्ताव सार्वजनिक रूप से पारित कर दिया गया। इस बैठक में दयानन्द ऐंग्लों वैदिक कॉलेज स्थापित करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया।[11] इस सभा में उपस्थित अधिकांश व्यक्ति मध्यम वर्ग के थे। इसके बावजूद भी उस समय 7000 से लेकर 8000 रूपये तक एकत्रित कर लिये गये। इस कोश में स्त्रियों, बच्चों तथा दरिद्र व्यक्तियों ने भी अपना अंश प्रदान किया। इस प्रकार शिक्षा से सम्बन्धित यह आन्दोलन, जो लाहौर से आंरभ हुआ, सम्पूर्ण प्रान्त में भीघ्र फैलने से नहीं रोका गया।[12]

दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना के समय जो उद्देश्य रखे गये थे, उसके पंजीकृत अभिलेख के अनुसार इस प्रकार हैं :–

1. इस संस्था का उद्देश्य दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज को स्थापित करना हैं। इसके अन्तर्गत एक स्कूल और एक कॉलेज तथा एक छात्रावास स्वामी दयानन्द सरस्वती के स्मारक के रूप में बनाने का प्रावधान है।
2. हिन्दी साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित करना तथा उसे उन्नत बनाना।
3. शास्त्रीय संस्कृत तथा वेदों के अध्ययन को सैद्धांतिक तथा प्रायोगिक दृश्टि से उत्साहित करना।
4. दयानन्द ऐग्लों वैदिक संस्थान के अन्तर्गत छात्रों को तकनीकी शिक्षा हेतु साधन उपलब्ध कराना, परन्तु यह कार्य प्रथम उद्दे य की पूर्ति में बाधक नहीं होना चाहिए।[13]

इस बात पर पहले ही चर्चा की जा चुकी है कि आर्य समाज द्वारा दो प्रकार के शिक्षण संस्थाओं का गठन किया गया था। एक, वे शिक्षण संस्थान जो सरकारी शिक्षा पद्धति से सम्बन्धित थे, जैसे डी0ए0वी0 संस्थान। दूसरे वे शिक्षण संस्थान जो सरकारी नियन्त्रण से मुक्त थे, जैसे गुरूकुल संस्थान। आर्य समाज आन्दोलन के प्रयासों से लाहौर में जिस डी0ए0वी0 स्कूल की स्थापना की गई थी उसके सन्दर्भ में महत्वपूर्ण बात यह है कि लाला हंसराज ने इस विद्यालय को बिना वेतन लिए अपनी

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सेवाएँ प्रदान की थी।[14] डी0ए0वी0 संस्थाओं की स्थापना भारत के विभिन्न प्रान्तों में अत्यधिक तीव्रता के साथ की गई जबकि गुरूकुल पद्धति पर आधारित शिक्षण संस्थान इतने लोकप्रिय नहीं बन पाये।[15]

इस प्रकार के त्याग से आर्य समाज के प्रतिनिधियों के लिए 1886 में डी0ए0वी0 कॉलेज का प्रथम विद्यालय विभाग स्थपित करना सम्भव हो सका। लाला हंसराज ने इस संस्थान के निर्देशक के रूप में कार्य किया। कॉलेज के हित के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दियां उन्हीं के समान एक अन्य आर्य समाजी कार्यकर्ता लाला मुन्शीराम ने भी सन् 1902 में हरिद्वार में गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की।[16] इन दोनों व्यक्तियों ने आर्य समाज को मजबूती प्रदान की। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द के बाद आर्य समाज के गठन में इन दोनों व्यक्तियों का नाम सर्वोपरि है।[17]

आर्य समाज द्वारा विद्यालयों की स्थापना का श्रेय कुछ अन्य आर्यसमाजियों को भी जाता है। इनमें से पंजाब चीफ कोर्ट के न्यायाधीश रह चुके राय बहादुर लाला लालचन्द का नाम भी उल्लेखनीय है। उपरोक्त सभी व्यक्तियों की रूची दयानन्द ऐग्लों वैदिक कॉलेज तथा आर्य समाज की सेवा करना था। इन लोगो के प्रयासों से 1914 में यह विद्यालय उत्तर भारत का सबसे बड़ा महाविद्यालय बन गया तथा छात्रों की संख्या के दृश्टिकोण से इसे भारत में दूसरे दर्जे का विद्यालय कहा जा सकता था।[18] इस सन्दर्भ में जून 1914 में लाला लाजपत राय ने कॉलेज के स्थापना दिवस के अवसर पर लंदन में एक भाशण दिया था। इस भाशण के अनुसार :–

''मैं उन सिद्धांतों के विशय में बोलना चाहूँगा जिनको ध्यान में रखते हुए कॉलेज को संचालित किये जाने का प्रयास किया गया था। संस्था के संविधान में उल्लिखित कर दिया था कि विद्यालय की प्रबन्ध व्यवस्था उन आर्यसमाजों के चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथें में रहेगी, जो इसके कोश में नियमित रूप से दान दिया करेंगे। इनके साथ ही विभिन्न व्यवसायों तथा वर्गो के कुछ हिन्दुओं को भी प्रबन्ध में सम्मिलित किया जायेगा। बिना किसी अपवाद के इस नियम का बराबर पालन किया गया है। इस सम्बन्ध में यह भी महत्वपूर्ण विशय है कि कॉलेज की प्रबन्ध व्यवस्था में किसी गैर हिन्दू को समाविश्ट नहीं किया जायेगा।[19]

आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने यह भी निर्धारित कर दिया था कि कॉलेज में अध्यापन कार्य का दायित्व भारतीय प्राध्यापकों द्वारा ही किया जायेगा। कॉलेज में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी, दर्शनभाास्त्र, इतिहास, राजनीतिक विज्ञान, तर्कशास्त्र, प्रारभिक प्राणी भाास्त्र तथा उच्चतर गणित की शिक्षा देने का प्रावधान रखा गया था। इस कॉलेज के विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम भी बढ़िया रहता है। कॉलेज के विद्यार्थी संस्कृत एवं गणित में विशेश योग्यता प्राप्त कर सफल होने वाले विद्यार्थियों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करते हैं। अनेक बार उन्होंने परीक्षाफल में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। विश्वविद्यालय के परिणामों के आधार पर घोशित होने वाली छात्रृत्तियों बड़ी संख्या में प्रति वर्श डी0ए0वी0 कॉलेज के विद्यार्थियों को दी जाती है।[20]

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने कॉलेज की स्थापना करते समय यह भी प्रावधान रखा था कि वे कॉलेज संचालन के लिए सरकार से वित्तीय सहायता नहीं ग्रहण करेंगे। इस सिद्धान्त का पूरी तरह पालन किया गया।[21]

आर्य समाज ने विद्यालय की स्थापना के समय निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान रखा था। धन की कमी तथा सरकार के नियमों ने इस सिद्धान्त के अनुपालन में बाधा उत्पन्न की इसके बावजूद भी डी0ए0वी0 संस्थानों द्वारा लिया जाने वाला शिक्षा–शुल्क राजकीय स्कूलों एवं कॉलेजों में लिये जाने वाले भाुल्क से 50 प्रतिशत कम होता है।[22]

आर्य समाज के प्रयासों से स्कूल विभाग जून 1886 में प्रारम्भ किया गया और खुलने के साथ ही उसने लोकप्रियता प्राप्त कर ली। कॉलेज विभाग जून 1889 में एक दर्जन से भी कम छात्रों के साथ प्रारम्भ किया गया था। इस संस्था की लोकप्रियता का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि 31 दिसम्बर 1913 को 1737 छात्र विद्यालय विभाग में तथा 903 कॉलेज विभाग में अध्ययन कर रहे थे। इसके अतिरिक्त कॉलेज के वैदिक विभाग, आयुर्वेद संकाय, अभियांत्रिकी तथा सिलाई कक्षाओं के विद्यार्थियों की संख्या इनसे पृथक थी।[23]

इस कॉलेज का आरंभ 1886 में 40,000 से भी कम रूपयों में किया गया था जबकि कॉलेज की सम्पूर्ण सम्पत्ति 10 लाख से भी अधिक नहीं थी। इसमें किसी भी व्यक्ति की दानराशि 10 हजार से अधिक नहीं है। इस कॉलेज की सफलता का मूल कारण आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं की वह भावना है जिसमें उनका त्याग और बलिदान भाामिल है।[24]

दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना के बाद इसके छात्रावासों में रहने वाले विद्यार्थियों की संख्या लगभग 697 से भी अधिक थी। लगभग इतने ही छात्रों की संख्या विद्यालय विभाग में भी थी लेकिन इन तथ्यों को स्वीकार करना होगा कि गुरूकुल कांगड़ी के छात्रों ने हिन्दू आदर्शो के अनुकूल शिक्षा प्राप्त की।[25]

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आर्य समाज के भााकाहारी विभाग के द्वारा स्थापित तथा संचालित किया गया था। इसकी स्थापना के पीछे भी वैसे ही कारण कार्य कर रहे थे, जिसने दयानन्द सरस्वती को अपने घर को त्यागकर सत्य की तला ा में भटकने के लिए प्रेरित किया था। गुरूकुल के संस्थापकों ने डी0ए0वी0 कॉलेज की स्थापना में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया था। परन्तु उन्होंने कुछ वर्शो उपरान्त यह अनुभव किया कि जो शिक्षा प्रणाली डी0ए0वी0 संस्थानों में प्रचलित है वह उनके मनोनुकूल नहीं है। अर्थात यह पद्धति शिक्षा के वैदिक आदर्शो के अनुसार नहीं है। गुरूकुल से सम्बन्धित आर्यसमाजी नेता लाला मुन्शीराम का डी0ए0वी0 विद्यालय के सन्दर्भ में यह भी कहना था :–

''कॉलेज के संचालक सुदृढ़ और व्यवस्थित राश्ट्रीय शिक्षा की अपेक्षा विश्वविद्यालय के परीक्षा परिणामों की अधिक चिन्ता करते है। इसलिए राजकीय वि ववद्यिालयों के साथ इस कॉलेज के सम्बन्धित होने

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

से इस कॉलेज की पाठ्य प्रणाली में वे कभी भी अपेक्षित क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं कर पायेंगे तथा उनकी स्वतन्त्रता में बाधा पड़ेगी।[26]

लाला मुन्शीराम ने कुछ समय तक डी0ए0वी0 संस्थान से जुड़े आर्यसमाजियों के साथ मिलकर क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने का प्रयास किया, परन्तु शीघ्र ही यह अनुभव कर लिया कि जिन आर्यसमाजियों के हाथ में कॉलेज का प्रबन्ध हे, उनमें से अधिकांश क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम नहीं हैं। इसलिये उन्होंने स्वामी दयानन्द द्वारा रचित ग्रन्थों में प्रस्तुत की गयी शिक्षण प्रणाली को वास्तविक रूप प्रदान करने का प्रयास किया। इस योजना का प्रमुख लक्ष्य वैदिक संस्कृति में उच्च नैपुण्य प्राप्त करना तथा चरित्र निर्माण करना निश्चित किया गया।[27]

लाला मुन्शीराम 1885 में आर्य समाज के सभासद बने थे। उनका कहना था कि भविश्य में गुरूकुल एक ऐसा शिक्षण संस्थान होगा जिसकी स्थापना के पीछे ब्रह्मचर्य के प्राचीन आदर्श को फिर से जीवित करना होगा। इसका उददेश्य प्राचीन भारतीय दर्शन तथा साहित्य का पुनरूद्धार, भारत के पुरातात्विक क्षेत्रों का अन्वेशण तथा एक ऐसे हिन्दू साहित्य का निर्माण करना होगा जिसमें पाश्चात्य विचारधारा का समावेश हो।[28]

गुरूकुल की स्थापना के सन्दर्भ में लाला मुन्शीराम की विचारधारा थी कि वे इस विद्यालय को विशुद्ध वैदिक संस्थान के रूप में स्थापित करना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में उनकी विचारधारा इस प्रकार है :–

आर्य समाज का उद्दे य एक ऐसे विद्यालय की स्थापना है, जहाँ वैदिक शिक्षा के आधार पर धार्मिक चरित्र का निर्माण किया जा सके। हमारा उद्दे य उन्हें विद्यालय के माध्यम से उत्तम नागरिक तथा धार्मिक प्रवृत्ति का बनाना है। हमारे समक्ष प्राचीन भारत के तक्षशिला विश्वविद्यालय का आदर्श है। जिसमें सैकड़ों छात्र विद्या अध्ययन के लिए एकत्रित होते थे तथा जिसकी सभी आव यकतायें राज्य तथा सम्पन्न नागरिकों की उदार आर्थिक सहायता से पूरी की जाती थी।[29]

गुरूकुल संस्था में प्रारम्भ में 274 छात्र थे जिनमें 14 महाविद्यालय विभाग में तथा 260 अविशिश्ट दस श्रेणियों में थे। प्रवेश के समय छात्रों की आयु छः या सात वर्श निर्धारित की गयी थी। उन्हें इस शर्त पर प्रवेश दिया जाता था कि उनको सोलह वर्श तक यहाँ रहना होगा। प्रवेश के समय छात्रों को सादगी, पवित्रता तथा आज्ञापालन का व्रत लेना होता था तथा दसवें वर्श की समाप्ति पर इस व्रत को पुनः ग्रहण करना होता था। छात्रों को केवल विशेश परिस्थितियों में घर लाने की अनुमति मिलती थी।[30]

लाला मुन्शीराम ने इस विद्यालय को अपनी सेवायें बिना वेतन के प्रदान की थीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपनी तीस हजार तथा चालीस हजार मूल्य के बीच की सम्पत्ति गुरूकुल को दान में अर्पित कर दी थी। आर्य समाज ने गुरूकुल में इस बात का प्रावधान रखा था कि छात्रों की शिक्षा का माध्यम मातृभाशा रखा जाना चाहिए। हिन्दी भाशा को शिक्षा का माध्यम बनाना इस संस्था की प्रमुख

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वि ोशता थी जिसे अत्यधिक महत्व दिया गया था।[31] आर्य समाज द्वारा स्थापित गुरूकुल शिक्षण संस्थान का भ्रमण 6 मार्च, 1913 को संयुक्त प्रान्त के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर जेम्स मेस्टन ने किया था। विद्यालय के सन्दर्भ में अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए गवर्नर महोदय ने कहा था –

''गुरूकुल शिक्षण संस्थान आश्चर्यचकित करने वाला, रोचक तथा प्रेरणादायक संस्थान है। इस संस्थान में कुछ ऐसे तपस्वी प्रकृति के लोग अपने कर्तव्य पालन में संलग्न है जो प्राचीन ऋशियों की परम्पराओं का अनुसरण करते हुए एक एकान्त स्थल पर कार्यरत है। इन्हें अत्याधुनिक वैज्ञानिक प्रणालियों का भी ज्ञान है तथा व्यवहारिक रूप से ये बिना वेतन कार्य करते है। इसमें अध्ययन करने वाले विद्यार्थी स्वस्थ शरीर वाले, आज्ञाकारी वफादार, चिन्तनशील, लगन ील तथा अत्यन्त प्रसन्न प्रकृति के हैं। इन्हें असाधारण रूप से पौश्टिक भोजन दिया जाता है।[32]

उपरोक्त डी0ए0वी0 कॉलेज तथा गुरूकुल कांगड़ी शिक्षण संस्थानों के अतिरिक्त आर्य समाज ने लड़कों की अनेक प्राथमिक, माध्यमिक पाठशालायें स्थापित की थीं। इनमें से अनेक उच्च श्रेणी के शिक्षण संस्थान भी थे जो लड़कियों की शिक्षा के लिए थे। आर्य समाज अनेक प्राथमिक तथा माध्यमिक कन्या विद्यालय संचालित करता है। इन संस्थानों में संगीत, गृह विज्ञान, पाक विद्या, सिलाई, अंग्रेजी, संस्कृति, हिन्दी, इतिहास, भूगोल, तथा राजनीतिक भाास्त्र आदि विशय पढ़ाये जाते है। हिन्दी भाशा ही शिक्षा का एकमात्र माध्यम है। यह संस्थाएँ भी सरकार से कोई अनुदान नहीं लेती है। [33]

सन्दर्भ सूची

बर्टरैण्ड रसेल : हिस्ट्री ऑफ वेस्टर्न फिलॉसफी एण्ड इट्स कनेक्शन विद पॉलिटिकल एण्ड सोशल सरकमस्टांसिज फ्रॉम द अर्लियस्ट टाइम्स टू द प्रजेंट डे, जोर्ज एलन एण्ड अनविन, लंदन, 1946, पृ0 191–192।

वही

वही

गंगाप्रसाद उपाध्याय : आर्योदय काव्यम्, कला प्रेस, प्रयाग वाराणसी 1983, पृ0 191–193।

वही, पृ0 193–194।

लाला लाजपत राय : आर्यसमाज (भारत के नवजागरण आन्दोलन में प्रमुख प्रगतिशील धार्मिक संस्था का तथ्यपूर्ण विवेचन), आर्य प्रकाशन, दिल्ली, 2001, पृ0 176–177।

वही

झवेर चन्द्र मेघाणी : स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद, 1949, पृ0 110।

भवानी लाल भारतीय : महर्शि दयानन्द की आत्मकथा और आर्यसमाज आन्दोलन, अजमेर, 1993, पृ0 171–72।

वही

लाला लाजपत राय : आर्यसमाज (भारत के नवजागरण आन्दोलन में प्रमुख प्रगतिशील धार्मिक संस्था का तथ्यपूर्ण विवेचन), पृ0 179।

वही पृ0 179–180।

वही पृ0 180।

एम0एस0जैन : आधुनिक भारत का इतिहास, चतुर्थ संशोधित संस्करण, विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृ0 290–292

वही

लाला लाजपत राय : आर्यसमाज (भारत के नवजागरण आन्दोलन में प्रमुख प्रगति ील धार्मिक संस्था का तथ्यपूर्ण विवेचन), पृ0 181।

वही

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

धर्ममित्र आर्य सेवक : दयानन्द दिग्विजय और आर्य समाज, आर्य प्रतिनिधि उपसभा, पानीपत, 1924, पृ0 236–237।
वही
लाला लाजपत राय : आर्यसमाज (भारत के नवजागरण आन्दोलन में प्रमुख प्रगतिशील धार्मिक संस्था का तथ्यपूर्ण विवेचन), पृ0 183–184
अमर सिंह आर्य : ऋशि दयानन्द और आर्य समाज का शैक्षिक आन्दोलन, लालचंद बाहरी ट्रस्ट, कलकत्ता, 1962, पृ0 181
वही पृ0 183
वही पृ0 184
लाला लाजपत राय : आर्यसमाज (भारत के नवजागरण आन्दोलन में प्रमुख प्रगतिशील धार्मिक संस्था का तथ्यपूर्ण विवेचन), पृ0 184–185
वही पृ0 186
दि टाइम्स पत्र में वैलेन्टाइन शिरोल का लेख : पंजाब और आर्य समाज नामक शीर्शक से, 6 मार्च 1913, पृ0 7
वही
ऐंग्लो इण्डियन दैनिक : पायनियर, 27 दिसम्बर 1885, पृ0 7, नेहरू मैमोरियल म्यूजियम एण्ड लाईब्रेरी, तीन मूर्ति हाउस, नई दिल्ली में उपलब्ध
वही
प्रास्पेक्टस : गुरूकुल कांगड़ी वि ववियालय, कांगड़ी प्रेस, हरिद्वार, 1979, पृ0 11–12
रमणलाल बसंतलाल देसाई : महर्शि दयानन्द और आर्य समाज का इतिहास, श्रद्धानन्द पुस्तकालय, बडौदा, 1997, पृ0 75।
लाला लाजपत राय : आर्यसमाज (भारत के नवजागरण आन्दोलन में प्रमुख प्रगतिशील धार्मिक संस्था का तथ्यपूर्ण विवेचन), पृ 194–195
वही पृ0 195।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies